



## श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन

॥दोहा॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन  
हरण भवभय दारुणं ।  
नव कंज लोचन कंज मुख  
कर कंज पद कंजारुणं ॥ १ ॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि  
नव नील नीरद सुन्दरं ।  
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि  
नोमि जनक सुतावरं ॥ २ ॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव  
दैत्य वंश निकन्दनं ।  
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल  
चन्द दशरथ नन्दनं ॥ ३ ॥

शिर मुकुट कुंडल तिलक  
चारु उदारु अङ्ग विभूषणं ।  
आजानु भुज शर चाप धर  
संग्राम जित खरदूषणं ॥ ४ ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर  
शेष मुनि मन रंजनं ।  
मम् हृदय कंज निवास कुरु  
कामादि खलदल गंजनं ॥ ५ ॥



मन जाहि राच्यो मिलहि सो  
वर सहज सुन्दर सांवरो ।  
करुणा निधान सुजान शील  
स्नेह जानत रावरो ॥६॥

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय  
सहित हिय हरषि अली।  
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि  
मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

॥सोरठा॥

जानी गौरी अनुकूल सिय  
हिय हरषु न जाइ कहि ।  
मंजुल मंगल मूल वाम  
अङ्ग फरकन लगे।